मोरंगे

जनवरी–फरवरी 2017

इस बार

खिड़की

3 आदिवासी स्कूल

कविताएँ

6 रंग बिरंगी / दाना–पानी

7 घसक मसक / बिस्कुट

8 भईया छईया

कहानियाँ

9 शेर की सेवा

10 शंकर की कहानी

11 वादा

13 नालायक

15 काम करो

याद की धूप–छाँव में

16 सावधानी

17 आप तो पढ़ाओ

बात लै चीत लै

19 घी बनावे खिचड़ी नाम बहू को होवे

21 भाषा की सहेलियाँ ...

22 हीहीही–ठीठीठी

23 कुछ हमने बढ़ायी ...

अर्चना, उम्र–13 वर्ष, समूह–बादल

सम्पादन : विष्णु गोपाल मीणा
सहयोग : उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक
डिज़ाइन : अश्विनी कुमार पंकज
प्रूफ़ : जीवनेद्र सिंह
वितरण : जितेन्द्र अग्रवाल
आवरण पर चित्र – किसना, उम्र–3 वर्ष, राजकीय विद्यालय, इटावदा
वर्ष 8 अंक 79–80

मोरंगे' का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन–आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, विभा–अमेरिका, पोर्टिकस–निदरलेण्ड, एच.टी. पारेख व W.C.T. के सहयोग से हो रहा है।

प्रबंधन
विजेन्द्र पाल
सचिव,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
हॉटल सिटी हार्ट के सामने,
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
(राजस्थान) 322001
फोन : 07462–220957
फेक्स : 07462–220460

खिड़की

आदिवासी स्कूल

लालीबाई,
उम्र–9 वर्ष, समूह–सागर

एक दिन वो आया। कौन आया?

वो आदमी जो प्रभावशाली और ताकतवर था। उसने आते ही कहा, ''अगर लड़का 10 साल का है, तो उसे जाना ही होगा!''

जब वो आदमी दुबारा वापिस आया तो उसके साथ एक ऊँचे कद का पुलि. सवाला भी था। वो गोरे लोगों के कपड़े पहने था। उसके सर पर टोपी थी और पैरों में जूते। वर्दी से चमचमाता चाँदी का मेडल, उसके काम और ओहदे का परिचय देता था।

''भाग! भाग! तेजी से भाग, छिप जा!'' मेरी माँ ने कहा।

''नहीं'' मेरे पिता ने कहा।

''मेरे बेटे यंग बुल को, अब जाना ही होगा। क्युंकि अब गोरे लोगों का राज है, इसलिए, अब उसे गोरों के तौर तरीके सीखने ही चाहिए। खेत में मक्का अब सूख रही है। जिस स्थान को वो स्कूल कहते हैं वहाँ कम–से–कम खाना तो मिलेगा। यंग बुल को अब जाना ही होगा।''

वे मुझे रेल्वे स्टेशन तक लेकर गए। वो दोनों आदमी जिनमें एक ताकतवर था और दूसरा पुलिसवाला था।

''तुम अब अंग्रेजी में बोलना, तुम्हारे लिए वही बेहतर होगा। ''उन्होने मुझसे कहा। फिर उसने अपने चाँदी के मेडल को चमकाया।

पर मैं उसके जैसा नहीं बनना चाहता था। स्कूल में उन्होने मुझे ले जाकर बताया, ''यह तुम्हारे सोने का कमरा है।''

कितनी खाली है यह जगह!

एक कतार में इतने सारे पलंग! भाईयों के साथ यहाँ मस्ती करने की कोई उम्मीद नहीं। धुएँ की भी कोई खुशबू नहीं। जमीन पर भी कोई दरी या कालीन नहीं। मुझे यहाँ बहुत अकेला लगेगा। मैं अपने साथ एक हिरण की खाल लाया था। मेरी कमीत और हिरण की खाल, वो छीन लेते हैं। मेरी माँ ने मेरे लिए मुलायम चमड़े के जूते बनाये थे। वे उन्हें भी छीन लेते हैं। फिर मुझे चुभने वाले ऊन की स्कूल यूनिफार्म पहनाते हैं। यूनिफार्म सिलेटी रंग की है और उसमें गले के पास बटन है।

''अब तुम चेयने नहीं रहोगे।'' उन्होने कहा।

''तुमने कुछ भी मूल्यवान नहीं खोया है। तुम भी हमारे जैसे ही बन जाओगे।''

मैं वहाँ भूगोल, गणित और लिखना सीखता हूँ। सब कुछ अंग्रेजी जुबान में। अम. रीकी साम्राज्य का इतिहास मैं देखता हूँ सिर्फ किताबों में। पर उसमें कहीं उस युद्ध का कोई उल्लेख नहीं मिलता जहाँ जनरल कस्टर ने हमारे बहादुर चेयने और सीओक्स पर हमला किया था। उनकी किताबें नहीं बताती कि हमने उन्हें हराया था। हमने उन्हें शिकस्त दी थी। उसके बाद हमने उनके मरे लोगों को नदी के किनारे हमेशा सोने के लिए छोड़ दिया था। मेरे लोग इस कहानी को बड़े गर्व से सुनाते हैं। पर गोरों की किताबों में इसका जिक्र कोई नहीं। वो खामोश हैं।

''पढ़ाई पर ध्यान दो, क्लास में बैठ कर सपने मत देखो,'' टीचर ने मुझे फटकार कर कहा।

क्या तुम सारी जिन्दगी एक जाहिल, मूर्ख इंडियन बने रहना चाहते हो?''

मैने सिर्फ अपना सिर हिलाया। बिगुल बजने की आवाज खाने के वक्त का संकेत है। फिर हम बढ़ईगीरी सीखते हैं ताकि उन तम्बुओं की मरम्मत कर सकें। फौज के सैनिकों की तरह हमें लेफ्ट–राईट करना पड़ता है, जिससे हम शैतानियों से बच सकें। हमारे पैर मुलायम जूतों के आदी हैं। फौजी जूतों में परेड़ करते–करते, पैर दुखने लगते है। हमें चर्च में जाकर गोरे लोगों के ईश्वर और उसके प्रेम के बारे में सीखना पड़ता है। यहाँ हम अपनी चेयनी जुबान नहीं बोलते और न ही अपने ईश्वर–महान आत्मा जिसने जमीन पर हमारी परवरिश की, की कभी स्तुति करते हैं। वो चाहते हैं की हमारे अन्दर बसा इंडियन लुप्त हो जाए। वो हमें पालतू बनाना चाहते हैं।

रात में सोते–सोते मुझे ट्रेन की आवाज सुनाई देती है। तब मुझे घर की बेहद याद आती है और तब मैं सुबक–सुबक के रोता हूँ। एक बार ठंडी चाँदनी रात में, मैं वहाँ से भाग निकला। गहरी मुलायम बर्फ में मेरे पाँव धँसने लगे। मेरे पास न तो घोड़ा था, और न सफर के लिए खाना, जो कभी मेरी माँ ने मुझे दिया था। उस

पत्थर ने तमाम सर्द हवाएँ और तूफान झेले थे, और वो अभी भी पुख्ता था। मैं ताकत के लिए उसे कसकर पकड़े रहता हूँ। फिर सामने से एक तेज बर्फ का तूफान आता है। वो मुझे घेर लेता है। मैं अब दौड़ भी नहीं सकता हूँ।

स्कूल के सिपाही मुझे वहाँ खोजते हुए आ पहुँचते हैं वे मुझे वापिस स्कूल ले जाते हैं। हर भागे हुए बच्चे को पकड़ने के लिए सिपाहियों को पाँच डॉलर का ईनाम जो मिलता है। वो मेरे पैर के टखनों में एक दिन के लिए लोहे की एक भारी गेंद को चेन से बांधते हैं।

''स्कूल में अनुशासन होना चाहिए,'' वो कहते हैं।

यहाँ एक टीचर हैं जो मुझे अच्छी लगती है। वो कहती है, ''हमारी दुनिया बहुत तेजी से बदल रही है, हम सभी को बदलना चाहिए। मुझे लगता है की तुम यहाँ जो कुछ भी सीखोगे वो एक दिन तुम्हारे काम आयेगा। पर यह काम आसान नहीं, काफी कठिन है।''

चेन ने मेरे पैर को जहाँ रगड़ा था उस चोट पर लगाने के लिए वो मुझे मलहम देती है।

''हाँ, यह बात कभी नहीं भूलना कि तुम अन्दर से हमेशा इंडियन रहोगे। अपनी यादों को संजों कर रखना, जिससे हम कभी उन्हें छीन न पायें।''

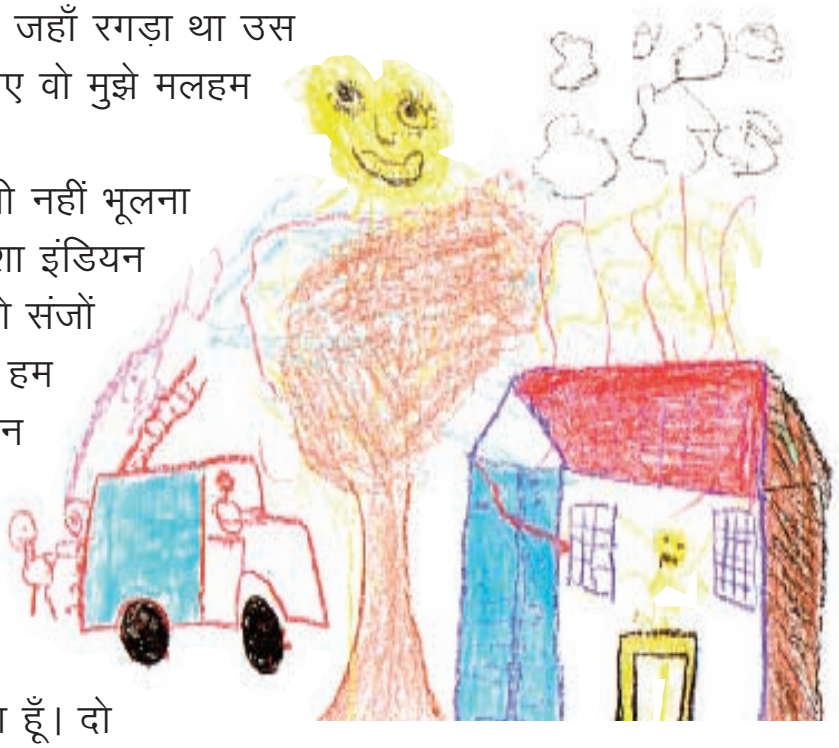

हर्षवर्द्धन, उम्र–10 वर्ष, समूह–शीशम

मैंने अपनी कॉपी में से एक लाईन वाला कागज फाड़ा। मैं उस पर चित्र बनाता हूँ। दो योद्धाओं के, जो रंग–बिरंगे, छोटे घोड़ों पर सवार हैं। एक के सर पर कल्गियों वाली टोपी है। उसकी पतलून का धानी–हरा गोटा चमक रहा है। उसके घोड़े की काठी लाल सुर्ख है। दूसरे के हाथ में पीली पट्टी वाली ढाल है। मैने एक बार उन्हे देखा था चेयनी के आसमान तले। पन्ने पर बनी लकीरें पतली और एकदम सीधी हैं, बिल्कुल काँटों की बाड़ जैसी। मैं बाड़ के तार को काटकर अन्दर घुसता हूँ और अपने जहन में मैं भी उन योद्धाओं के साथ–साथ सुनहले मैदान में आगे बढ़ रहा हूँ।

स्रोत – हिन्दी चिल्ड्रन बुक्स

रंग–बिरंगी

बाग में तितली रंग–बिरंगी।
पानी में मछली रंग–बिरंगी।
आकाश में चिड़िया रंग–बिरंगी।
बगिया के पौधे रंग–बिरंगे।
नदी–तालाब रंग–बिरंगे।
खेलें अंटी रंग–बिरंगी।
चित्र बनाते रंग–बिरंगे।
कपड़े बनते रंग–बिरंगे।
गुब्बारे भी हैं रंग–बिरंगे।
सारी दुनियां रंग–बिरंगी।
फिर क्यों पहनाते हमको,
स्कूल में कपड़े इकरंगे?

विष्णु गोपाल

अंकिता मीना,
उम्र–9 वर्ष, समूह–रौशनी

सुनील,
उम्र–7 वर्ष, समूह–खुशबू

दाना–पानी

चिड़िया की चोंच में दाना है
बच्चों को उसे खिलाना है
शहर उसे जाना है
नाच उसे दिखाना है
पैसे उसे कमाने है
घर उसे बनाना है।

सोनू बैरवा,
उम्र–10 वर्ष, समूह–वीर शिवाजी

संगीता,
उम्र–12 वर्ष,
समूह–संगम

घसक मसक

घीस्या घसक
पाणी की मसक
पाणी पीग्यो कूकड़ो
घीस्यो मांगे टुकड़ो
टूकड़ा में भाजी
घीस्या की माई राजी।

जितेन्द्र नायक,
उम्र–10 वर्ष, समूह–वीर शिवाजी

बिस्कुट

मेरा पापा बिस्कुट लाया।
सुबह हुई तो उसको खाया।
खाकर हम स्कूल गये।
जाकर हमने गीत सुनाया।
सबने मिलकर साथ निभाया।
सब बच्चों का बड़ा मजा आया।

सफेदी बाई,
उम्र–7 वर्ष, समूह–सागर

भईया छईया

आई बारिश प्यारी बारिश।
सबके मन को भाई बारिश।
मोर भी आया,
लोमड़ी भी आई,
सब मिलकर नाचे ता–ता थईया।
इतना शोर सुनते ही गुफा से निकलकर,
आया शेर भईया।
सारे जानवर दौड़ कर भागे,
भागी सोन चिरैया।
शेर भईया जी धड़ाम से फिसले,
टूटी टांग आईया।
सारे जानवर दौड़ के आये,
उठा ले गये छईया।

आशा यादव, शिक्षिका,
उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

पवन गुर्जर,
उम्र–9 वर्ष,
समूह–सागर

शेर की सेवा

एक बार एक मुर्गा और एक मुर्गी थी। वे दोनों घूमने के लिए जंगल में गये। उनको एक शेर मिला। शेर ने कहा कि, ''मैं तुम दोनों को खाऊंगा, यदि तुम दोनों मेरी सेवा करोगे तो मैं तुम दोनों को छोड़ दूंगा।'' मुर्गा और मुर्गी दोनों शेर की सेवा करने लगे। वे दोनों शेर को लेकर सड़क पर आ गये। उनको रास्ते में एक ट्रक आता हुआ मिला। ट्रक वाले ने ट्रक रोककर मुर्गा–मुर्गी से पूछा कि, ''तुम शेर को कहाँ लेकर जा रहे हो?'' मुर्गा–मुर्गी ने कहा कि, ''हम शेर को खाना खिलाने लेकर जा रहे हैं।'' ट्रक आगे निकल गया। आगे गये तो रास्ते में एक बिल्ली मिली। बिल्ली ने भी उनसे यही पूछा कि, ''तुम शेर को कहाँ ले जा रहे हो?'' मुर्गा–मुर्गी ने कहा कि, ''शेर को भूख लगी है, उसे खाना खिलाने ले जा रहे हैं।'' बिल्ली ने सोचा शेर के खाने के बाद मुझे भी कुछ खाने को मिल ही जायेगा। तो वह भी उनके साथ चल दी। आगे रास्ते में बहुत कीचड़ था तो उसमें शेर और बिल्ली दोनों फंस गये। मुर्गा और मुर्गी तो उड़कर उस कीचड़ से निकल गये और वापस भाग आये।

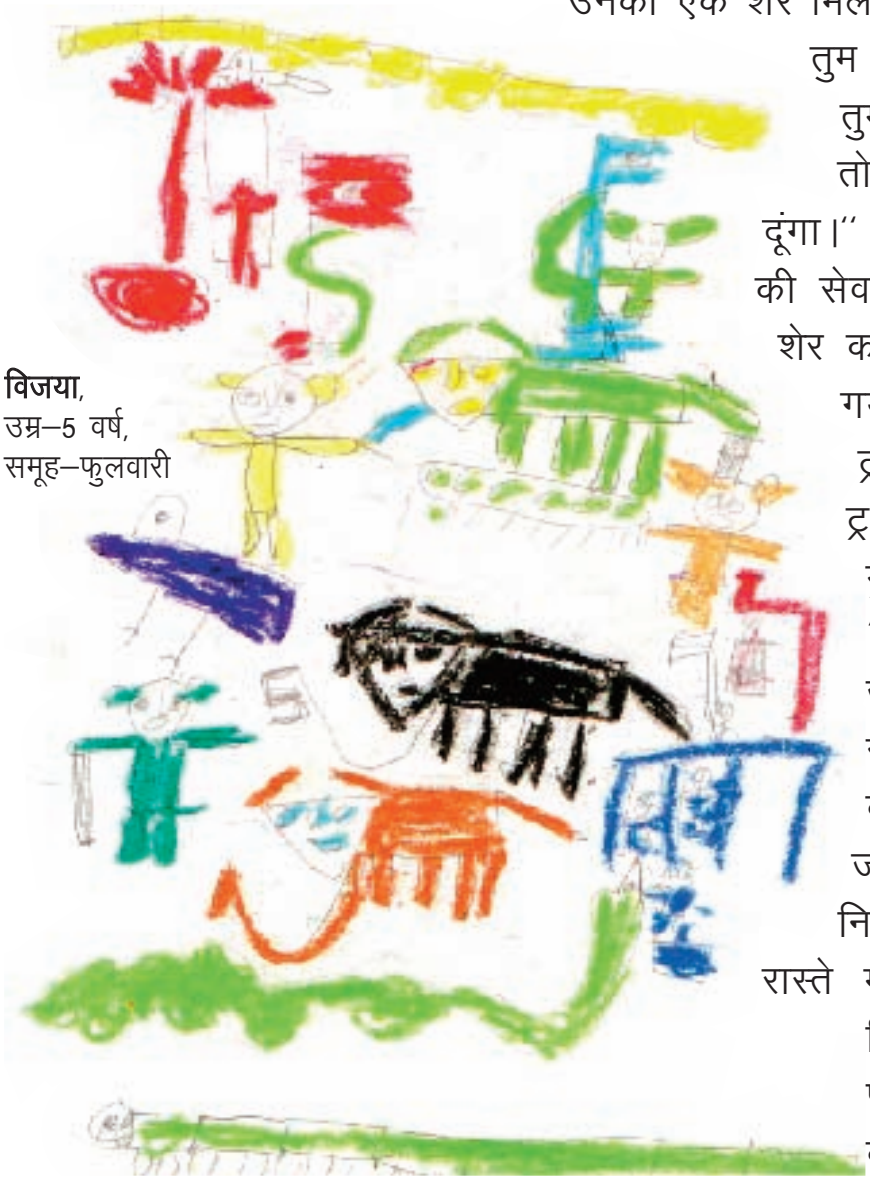

विजया,
उम्र–5 वर्ष,
समूह–फुलवारी

सोनिया गुर्जर, समूह–खूशबू, उम्र–5 वर्ष

शंकर की कहानी

प्रिया माली, कक्षा–5, राजकीय विद्यालय, स्वांस

एक गाँव था। उस गाँव में एक गरीब किसान रहता था। किसान का नाम शंकर था। उसके पास कुछ जमीन थी। पर बारिश नहीं होने से खेती बर्बाद हो गई। घर का खर्च चलाने के लिए वह जंगल जाता और लकड़ियाँ काटकर बेचता। गाँव में कम ही लोग उससे लकड़ियाँ खरीदते थे। जिसके कारण उसे अच्छे दाम भी नहीं मिल पाते थे। दिन बड़ी मुशकिल से कट रहे थे। एक दिन शंकर जंगल में लकड़ियाँ लेने गया। शंकर जंगल के बीचों–बीच गया तो उसे एक सुंदर सा पेड़ दिखाई दिया। शंकर उस पेड़ को देखकर खुश हो गया। उसने सोचा यह कोई खास पेड़ है। उसे इसके अच्छे दाम मिल जाएंगे। शंकर ने अपनी कुल्हाड़ी उठाई और उस सुन्दर पेड़ को काटने लगा। उस सुंदर पेड़ में से एक सुन्दर सी परी निकली। शंकर डर से काँपने लगा।

सुंदर परी ने कहा, ''तुम डरो मत।'' शंकर का डर कम हुआ।

सुंदर परी ने फिर कहा, ''इस पेड़ को मत काटो। मैं इसी पेड़ में रहती हूँ। यह पेड़ मेरा घर है। तुम चाहो जितना धन मुझसे ले लो।''

शंकर ने कहा, ''तुम मुझे एक डिब्बा धन दे दो। इस धन से मै भी अपने घर को बचा लूंगा।'' सुंदर परी ने शंकर को एक डिब्बा धन दे दिया। शंकर उस डिब्बे को लेकर अपने घर आ गया। शंकर ने जब डिब्बा खोला तो उसमें बहुत सारा पैसा था। शंकर ने उन पैसों से अपनी जमीन में एक कुँआ खुदवाया जिसमें खूब पानी निकला। अब उसकी खेती बारिश के भरोसे नहीं रही। उसने पेड़ काटने का काम छोड़ दिया। खेती की कमाई से उसने एक घर बनाया। जिसमें वह अपने परिवार के साथ खुशी से रहने लगा।

कालूराम नायक, समूह–गाँधी

वादा

भारती मीना, उम्र–9 वर्ष, समूह–खुशबू

एक राजा था। उस राजा का नाम अमरसिंह था। राजा अमरसिंह शिकार खेलने जाता था। वह रोजाना एक ना एक जानवर को मारता था। एक दिन उसको एक भी शिकार नहीं मिला। उसने तय किया कि वह एक ना एक जानवर को जरूर मारेगा। उसको वहीं रात हो गई। रात में उसको एक हिरन दिखाई दिया। समय लगभग रात के 12:00 बज रहे थे। उसने हिरन की तरफ तीर छोड़ा। उसने जैसे ही तीर छोड़ा वह हिरन राक्षस बन गया।

राक्षस ने राजा से कहा, ''तुम कौन हो?''

राजा ने जवाब दिया, ''मैं राजा अमरसिंह हूँ।''

राक्षस ने कहा, ''तुम यहाँ पर क्या कर रहे हो?''

अमरसिंह ने कहा, ''मैं यहाँ शिकार खेलने आया था, मुझे यहीं पर रात हो गई।''

राक्षस ने कहा, मैं तुम्हें खाऊँगा।''

राजा ने कहा, ''नहीं मुझे मत खाओ।''

राक्षस ने कहा, ''नहीं मैं तुम्हें ही खाऊँगा।''

राजा ने कहा, ''ठीक है, मुझे तुम खा लेना, मगर मेरी एक अंतिम इच्छा है। मुझे मेरे पिताजी से मिल आने दो।''

राक्षस ने हां कर दी। इधर राजा अमरसिंह के माता–पिता उसे याद करते हुए सो गये थे। रात के 03:00 बजे राजा महल में आया। राजा अमरसिंह ने देखा कि माता–पिता सो रहे हैं। उसने पिताजी को आवाज दी तो पिताजी की नींद खुल गई वे खड़े हो गये। राजा ने पिताजी को प्रमाण किया और उनके पैरों में पड़ गया।

उसने कहा, ''पिताजी मुझे उस राक्षस ने बुलाया है। मैंने उससे वादा भी किया है। राजा अपने माता–पिता से मिलकर वापस जंगल में चला गया। सुबह के 05:00 बज गये थे।

राजा ने राक्षस से कहा, ''अब तुम मुझे खा सकते हो।''

राजा अमरसिंह रोने लगा। उसने राक्षस को अपने माता–पिता के बारे में बताया और कहा कि, ''मेरे बूढ़े माता–पिता ने मुझे रोकने के लिए बहुत कोशिश की, परन्तु मैं नहीं रूका, मैंने आपसे किया हुआ वादा नहीं तोड़ा।''

इतना सुनकर राक्षस ने राजा अमरसिंह से कहा, ''राजा तुम सत्यवादी हो, मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हुआ। बताओं तुम क्या चाहते हो?''

राजा ने कहा, मुझे छोड़ दो और वादा करो की तुम आज के बाद किसी मुनष्य को नहीं खाओगे।'' राक्षस ने कहा, ''ठीक है, मैं आज आपसे वादा करता हूँ कि आज के बाद मैं किसी भी मनुष्य को नहीं खाऊँगा। पर तुमको भी एक वादा करना होगा।''

सोनू उम्र–10 वर्ष, समूह–खुशबू

राजा ने कहा, ''क्या?''

राक्षस बोला, ''तुम भी आज के बाद किसी जानवर का शिकार नहीं करोगे।''

राजा बहुत खुश हुआ और वापस अपने महल में आ गया। महल में आकर उसने अपने माता–पिता को प्रणाम किया।

राजा के पिता ने पूछा, ''तुम तो राक्षस के पास गये थे न!''

अमरसिंह ने कहा, ''हाँ पिताजी, परन्तु उसने मुझे छोड़ दिया और मुझसे वादा किया कि आज के बाद वह किसी भी मनुष्य को नहीं खायेगा और मैने भी जानव. रों को नहीं मारने का वादा किया है।''

राजा के माता पिता ने कहा, ''यह तो बहुत ही अच्छी बात है।''

पिन्टू प्रजापत, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

नालायक

मंजू मीना,
उम्र–11 वर्ष,
समूह–उजाला

एक बार एक व्यक्ति व्यापार करने के लिए दूसरे राज्य में जाता है। उसका व्यापार दूसरे राज्य में अच्छा चलने लगता है। वह व्यक्ति खूब सारा पैसा कमाकर वापस अपने राज्य को लौटता है। रास्ते में वह एक सराय में विश्राम करने के लिए रूकता है। सराय में वह भोजन करके सो जाता है। सराय में सोते–सोते उसको एक सपना आता है कि जब वह रास्ते में जा रहा होता है तो उसे एक बड़ा सा महल दिखाई देता है। उस समय उसको कोई भी दिखाई नहीं देता है। वह उत्सुकतावश उस महल में प्रवेश करता है। महल में दास–दासियों की मूर्तियाँ ही मूर्तियाँ दिखाई देती है। उसे एक भी व्यक्ति जीवित नजर नहीं आता। सारी चीजें व्यवस्थित दिखाई देती है। उसे सारे महल में एक चिड़िया जीवित दिखाई देती है। वह चिड़िया के सामने जाकर खड़ा हो जाता है और उसको निहारता है। निहारते–निहारते उसको चिड़िया के पंजे में एक चिट्ठी दिखाई देती है। व्यापारी उस चिट्ठी को निकालकर पढ़ने लगता है। तभी वह चिड़िया एक राजकुमारी बन जाती है। व्यापारी राजकुमारी को देखकर पूछता है कि यह सब क्या है? राजकुमारी इशारे से समझाती है कि तुम इस चिट्ठी को पढ़ो। व्यापारी ने चिट्ठी पढ़ी। उसमें एक पहेली थी। बगीचा में एक आम दिखा उसको तोड़ो तो राजकुमार निकला? व्यापारी पहेली को पढ़कर बगीचे की ओर जाता है। बगीचे में बहुत सारे आम के पेड़ थे। पेड़ों में बहुत सारे आम थे। उसे एक सुनहरा

सा आम दिखाई देता है। वह आम तोड़ता है तो आम एक राजकुमार में बदल जाता है तथा सारा महल सजीव हो जाता है। राजकुमार व्यापारी को धन्यवाद देता है। इतने में व्यापारी नींद से जाग जाता है। वह अपने गंतव्य स्थान के लिए रवाना होता है। उसे रास्ते में वैसा ही महल दिखाई देता है जैसा कि उसने सपने में देखा। वह अंदर जाता है। सारी घटनायें सपने जैसी होती हैं। राजकुमार उस व्यापारी को खूब सारा धन देकर विदा कर देता है। व्यापारी चलते–चलते सोचता है कि यह सब कैसे हुआ था? मैंने राजकुमार से पूछा ही नहीं और न ही राजकुमार ने बताया। व्यापारी को चलते–चलते प्यास लगती है। उसे एक ऋषि का आश्रम दिखाई देता है। वह वहाँ ऋषि के पास पानी पीने जाता है और ऋषि से पानी पिलाने का आग्रह करता है। ऋषि उसे पानी पिला देता है। व्यापारी उससे महल के बारे में पूछता है। ऋषि कहता है कि, ''वह महल मेरा था तथा वह राजकुमार मेरा बेटा है। वह राजा बनना चाहता था। वह बहुत नालायक था। वह बुरी संगत में पड़ चुका था। मैं धीरे–धीरे बूढा हो रहा था। मुझे राज्य व जनता की चिन्ता सताये जा रही थी। एक दिन वह मुझे अपमानित करके महल से बाहर निकाल देता है। मैं उसे, महल व जनता को श्राप देता हूँ कि यह राजकुमार एक आम बनेगा और बाकी जनता मूर्ति के समान बनकर रहेगी। किसी ईमानदार व्यापारी के द्वारा इस महल को श्राप से मुक्त किया जा सकेगा। जो तुमने किया।'' व्यापारी प्रसन्न होकर वहाँ से चल देता है और अपने घर पहुँच जाता है।

जीवनेन्द्र सिंह, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा।

मुकेश, उम्र–9 वर्ष,
समूह–सागर

एक बार की बात है। एक राजा था। वह रोज शिकार करने जंगल में जाता था। एक दिन राजा को जंगल में भूख लगी तो राजा फल ढूंढने लगा। उसे एक प्यारा पेड़ दिखाई दिया जिसमें बहुत सारे फल आ रहे थे। राजा पेड़ पर चढने की कोशिश करता है परन्तु चढ़ नहीं पाता है। तभी एक बंदर आया। बंदर ने कहा, ''राजाजी क्या बात है?'' राजा ने सारी बात बता दी। बंदर ने कहा, ''मैं फल तोड़ देता हूँ।'' बंदर फट से पेड़ पर चढ गया और फल तोड़ दिये। बंदर ने कहा, ''राजा इन फलों के बीजों को तुम्हारे महल के बगीचे में उगा देना।'' राजा महल में आ गया और बगीचे में बीज लगा दिये। कुछ दिन बाद उस बीज से पेड़ बन गया।

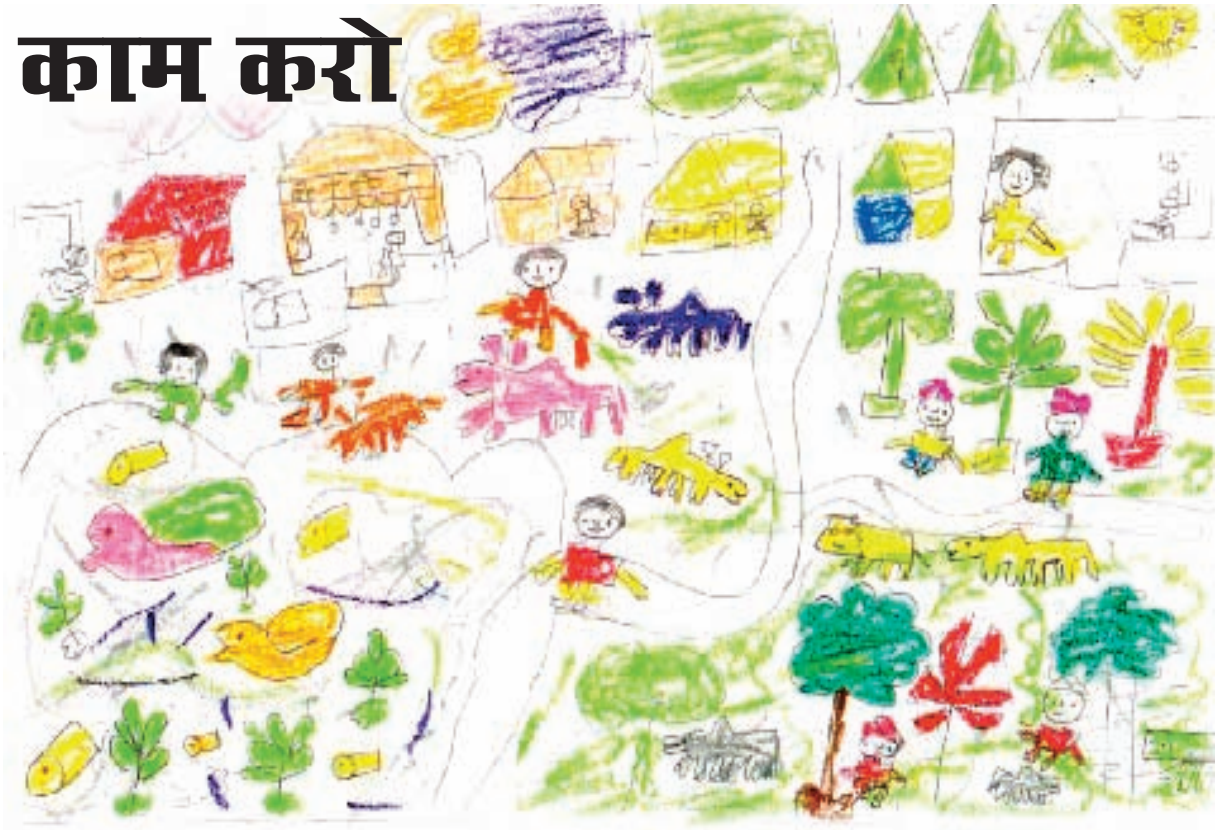

रामधनी गुर्जर, उम्र–10 वर्ष, समूह–सागर

उस पेड़ में सोने के सिक्के आने लगे। राजा यह देखकर बहुत खुश हुआ। वह राज्य के लोगों को सिक्के बांटता है। एक दिन उस राज्य में कहीं से चोर आते हैं और राजा के बगीचे में घुस जाते हैं। वे जैसे ही सोने के सिक्के वाले पेड़ के हाथ लगाते हैं तो उनको वहीं नींद आ जाती है। सुबह जब राजा पेड़ को देखने जाता है तो उसे वे चोर वहीं पर पड़े मिलते हैं। राजा उनको सैनिकों से पकड़वा लेता है। राजा चोरों से कहता है कि, तुम ऐसा काम करो जिससे तुम्हें पैसे मिले, चोरी मत करो।'' चोर राजा की बात मान लेते हैं। राजा उनको काम शुरू करने के लिए कुछ धन देकर विदा कर देता है। उसके बाद चोर चोरी करना छोड़ देते हैं।

मोनू मीना, समूह–खुशबू, उम्र–10 वर्ष

याद की धूप–छाँव में

सावधानी

हमारे गाँव से लगभग 1.5 किलोमीटर दूर दक्षिण दिशा की तरफ जमूलखेड़ा गाँव है। वहाँ देलवार जी का स्थानीय मेला लगता है। सभी बच्चे मेला देखने जाते हैं। उन दिनों मैं साईकिल चलाना सीख रहा था। मेरे पापा ने मुझे एक छोटी सा. ईकिल दिलवाई थी। मुझे साईकिल का इतना शौक लगा कि खाना भी समय पर नहीं खाता था। मैंने सोचा कि देलवार जी का मेला देखने साईकिल से चलते हैं। मैं और मेरा दोस्त दोनों साईकिल से मेला देखने चल दिये। दोनों ने मेला देखने का आनन्द लिया। मेला देखने के बाद हम दोनों घर वापिस आने लगे। मैंने अपने दोस्त को साईकिल के पीछे बिठाया और मैं रोड़ पर साईकिल चलाने लगा। अचानक सामने से एक मोटर साईकिल आ गई। मेरा सन्तुलन बिगड़ गया और मोटर सा. ईकिल के सामने आ गया। मोटर साईकिल वाले ने एक दम ब्रेक लगाये। तब तक साईकिल, मोटर साईकिल से भिड़ चुकी थी। लेकिन हम बच गये क्योंकि, मोटर साईकिल वाले ने सावधानीपूर्वक गाड़ी को रोक लिया था। मेरी साईकिल का आगे का टायर व रिंग मुड़ गये और मेरे पैर में हल्की सी चोट लग गई थी। हम दोनों साईकिल को लेकर पैदल–पैदल आने लगे। रास्ते में हमारी शाला में पढ़ने वाले लड़के ने मेरी साईकिल का टायर सही किया। मैंने अपनी साईकिल चुप–चाप घर रख दी और किसी को कुछ नहीं बताया। दूसरे दिन उस लड़के ने मेरे भैया को पूरी कहानी बता दी। मेरे भाई ने मुझे बहुत डाँटा। मैंने कहा कि अब कभी भी रोड़ पर साईकिल नहीं चलाऊँगा। लेकिन पापा से मत कहना। इसके बाद से ही मैं रोड़ पर साईकिल चलाने में बहुत सावधान रहता हूँ।

स्रोत – छात्र, राजकीय विद्यालय जमूलखेड़ा

सोनू गुर्जर, उम्र–9 वर्ष, समूह–सितारे

आप तो पढ़ाओ

उदय सामुदायिक पाठशाला फरिया जो कि समुदाय के सहयोग से समुदाय के लिए काम कर रही है। यहाँ लोग अपना सहयोग अपने–अपने तरीके से ही करते हैं। मैं अक्सर पाठशाला के कामों से वहाँ जाता रहता हूँ। पिछली बार जब मैं वहाँ गया था तो पता चला कि पाठशाला की बिजली पिछले कई दिनों से खराब चल रही थी। बिजली विभाग को सूचित किया पर कोई आया नहीं। शिक्षक रामलाल जी बिजली ठीक करवाने के लिए स्थानीय इलेक्ट्रिशियन से फोन पर संवाद कर रहे थे।

जगदीश मीना,
उम्र–11 वर्ष, समूह–सूरज

रामलाल – सत्यनारायणजी हमारे स्कूल की बिजली खराब हो गई है। आप आकर उसे ठीक कर दो बच्चे परेशान हो रहे हैं।

सत्यनारायण (इलेक्ट्रिशियन) – माटसाब, मैं हिम्मतपुरा में काम कर रहा हूँ और मेरे पास गाड़ी नहीं है। आप लेने आ जाओ तो मैं अभी आपके साथ चलकर ठीक कर दूंगा। नही ंतो दोपहर तक आना हो पाएगा।

माटसाहब कक्षा छोड़कर नहीं जा सके। तो दोपहर को जब सत्यनारायणजी आए तो उन्होने बिजली की जाँच कर बिजली ठीक कर दी।

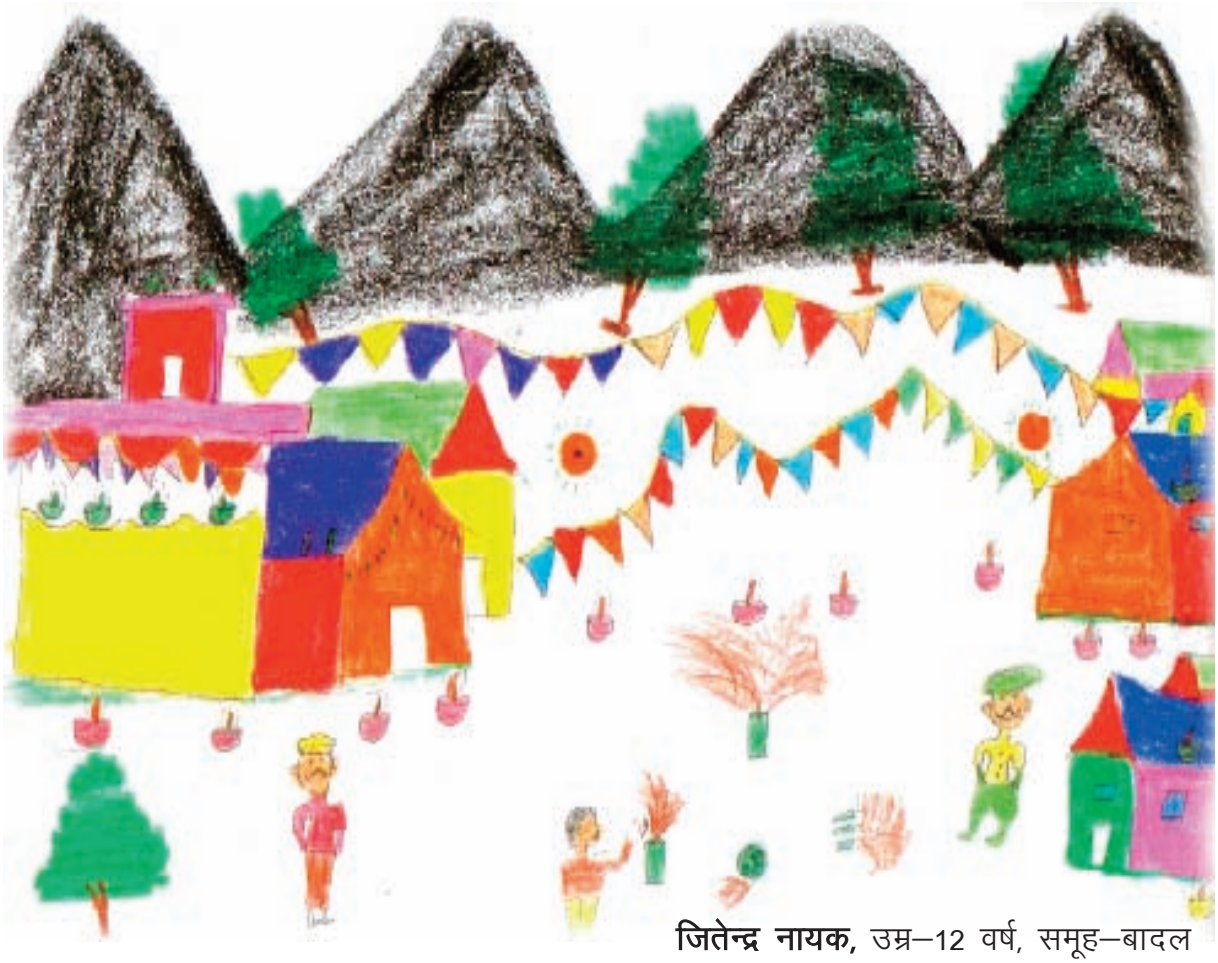

जितेन्द्र नायक, उम्र–12 वर्ष, समूह–बादल

रामलाल – सत्यनारायणजी आपका चार्ज कितना हुआ?

सत्यनारायण – अरे! माटसाब कोई चार्ज नहीं है। यह तो छोटा सा काम था।

रामलाल – फिर भी बताओ तो, किसी और को बुलाते तब भी चार्ज तो देना ही पड़ता।

सत्यनारायणजी – अरे! ऐसी कोई बात नहीं है। यह तो अपना ही स्कूल है। अपने ही बच्चे यहाँ पढ़ते हैं। अपने काम में कैसा चार्ज।

रामलाल – कहीं ऐसा तो नहीं कि बाद में हम बुलाएँ और आप नहीं आ पाओ? सोचने लगो कि पैसा तो मिलता ही नहीं।

सत्यनारायणजी – अरे! ऐसी बात नहीं है। माटसाब, आप तो आदेश करो। आपके लिए हर समय हाजिर हैं और मैं तो जब भी आप बुलाते हो तब फ्री होता हूँ तो आता ही हूँ।

रामलाल – धन्यवाद सत्यनारायणजी, चलो मैं आपको छोड़कर आता हूँ।

सत्यनारायणजी – रहने दो, आप तो पढ़ाओ। मैं तो चला जाऊंगा।

रामलाल – चलो ठीक है, धन्यवाद।

विष्णु गोपाल

घी बनावे खिचड़ी नाम बहू को होय

कादल, उम्र–10 वर्ष, समूह–बरगद

रामधन का छोटा सा परिवार था। उसके एक लड़का, लड़के की बहू और एक लड़की थी। लेकिन उसके रिश्तेदारों का दायरा बहुत बड़ा था। कोई–न–कोई उसके यहाँ आता रहता था। वह अपनी मर्यादा के अनुसार सबकी सेवा–सत्कार करता था। लेकिन उसकी पत्नी बहुत कंजूस थी। वह पूरी–पकवान आदि कभी नहीं बनाती थी, और न आने वाले रिश्तेदारों के लिए अच्छा भोजन बनाती थी। कभी मिस्सी रोटी और दाल बनाती थी और कभी चावल दाल की खिचड़ी। सब लोग खाकर संतुष्ट हो जाते थे। चूंकि रामधन बहुत अच्छा आदमी था। इसलिए जो भी मिलता बड़े आनंद से खाते थे और खाना खाते–खाते रामधन से बातें करते रहते थे।

रामधन के लड़के के विवाह के बाद घर में परिवर्तन आने लगा था। रिश्तेदारों को सादा भोजन कराना बहू को अच्छा नहीं लगता था। उसने एक बार अच्छा भोजन बनाने की कोशिश की तो सास ने डांट दिया। बुढ़िया रिश्तेदारों के लिए भी अच्छा भोजन नहीं बनाने देती थी। बहू रिश्तेदारों के लिए भोजन सादा ही बनाती थी लेकिन दाल या बनी सब्जी में घी ऊपर से डाल देती थी। अब जो भी रिश्तेदार आता था,

वह कहता था कि भोजन स्वादिष्ट बना है। बहू के भोजन की बढ़ाई सुनकर बुढ़िया कुढ़ने लगी। वह अब जल भुनकर आने वालों के लिए खिचड़ी बनवाने लगी।

अब आने वाले रिश्तेदार खिचड़ी खाकर ही प्रसन्न हो जाते। एक दिन बहुत समय बाद रामधन का बहनोई आया। उसके लिए भी खिचड़ी बनाई गई। जब रामधन का बहनोई खिचड़ी खा रहा था, वहीं पर रामधन और उसकी पत्नी भी बैठे थे। दोनों बैठे–बैठे अपने बहनोई से बतिया रहे थे। रामधन के बहनोई ने कहा कि, ''बहू खिचड़ी बहुत अच्छी बनाती है।'' बुढ़िया सुनकर जल भुन गई। वह गुस्से को अन्दर ही अन्दर पी गई लेकिन रिश्तेदार का मन रखने के लिए बुढ़िया ने हाँ में हाँ मिलाई।

रामधन के आस–पास उसकी बिरादरी वालों के मकान थे। कुछ लोगों के यहाँ रामधन के यहाँ आने वालों की रिश्तेदारियाँ थी। इसलिए जो रिश्तेदार रामधन के यहाँ आते थे, वे पड़ोस में रिश्तेदारों के यहाँ भी जाते थे। वहाँ उनको पूरी पकवान खाने को मिलते थे लेकिन वे रामधन की बहू के द्वारा बनाई गई खिचड़ी की बढ़ाई करते न चूकते थे। जब औरतें इकटठी होती तो रामधन की बहू की खिचड़ी की चर्चा जरूर होती। कोई–कोई किसी काम के लिए रामधन के घर जाती तो बुढ़िया से बहू की खिचड़ी की बड़ाई करती। इस प्रकार बहू की यह बढ़ाई उसके आस–पास पूरी बिरादारी में फैल गई थी।

एक दिन बुढ़िया सोचने लगी कि खिचड़ी बनाने में जरूर कोई रहस्य छिपा हुआ है। जब बहू खिचड़ी बनाती तो सास छिपकर देखने लगी कि उसमें क्या डालती हैं। बुढ़िया की इन हरकतों को देखकर बहू सावधान रहती। वह समझ गई थी कि बुढ़िया क्या जानना चाहती है। अब बहू बुढ़िया की नजर बचाकर खिचड़ी में घी डालने लगी। एक दिन बुढ़िया ने बहू को खिचड़ी में घी डालते देख लिया। लेकिन बुढ़िया अब कुछ नहीं कर सकती थी क्योंकि अब रसोई पर पूरा कब्जा बहू का था। अब बुढ़िया संतोष करके चुप रहती। क्योंकि वह जानती थी कि पूरी–पकवानों से खिचड़ी में घी कम ही खर्च होता है।

एक दिन किसी के यहाँ महिलाएँ इकट्ठी हुईं। वैसे बुढ़िया आस–पड़ोस में बहुत कम आती जाती थी, लेकिन बुढ़िया को वहाँ जाना पड़ा। जब महिलाएँ इकट्ठी बैठीं तो कुछ–न–कुछ बातें चलने लगीं। बातें चलते–चलते बात रामधन की बहू के ऊपर आकर टिक गई। औरतों ने रामधन की औरत से कहा कि तुम्हारी बहू खिचड़ी बहुत स्वादिष्ट बनाती है। रामधन की औरत चुपचाप सुनती रही। एक ने चुटकी लेते हुए कहा, ''अम्मा, मुझे भी सिखा दो ऐसी खिचड़ी बनाना।'' अब बुढ़िया से रहा न गया। उसने तुरंत कह दिया– ''घी बनावे खिचड़ी , नाम बहू को होय।''

स्रोत – विष्णु

मटरगश्ती बड़ी सस्ती

भाषा की सहेलियाँ
बूझो यार पहेलियाँ

मिथिलेश बैरवा,
राजकीय प्राथमिक
विद्यालय, पावण्डी

1 दांत बहुत पर नहीं काटता, आपस की उलझन सुलझाए।

2 रोज शाम को आती हूँ, रोज सवेरे जाती हूँ,
नींद मुझको कभी मत समझना, फिर भी तुमको सुलाती हूँ।

3 गोल है पर गेंद नहीं, पूँछ है पर पशु नहीं
काला हूँ, मीठा हूँ खा के न पाया कोई भूल।

4 तीन पैर की चम्पा रानी, शाम सवेरे नहाए
चावल दाल को छोड़कर, कच्ची रोटी खाए।

विकास महावर, बुद्धि प्रकाश सैनी, सुनीता मीणा, प्रीति जागा,
कक्षा–5, राजकीय विद्यालय श्यामपुरा

हीहीही-ठीठीठी

एक बार एक आदमी ट्रेन में सफर कर रहा था। वह बोलने में तुतलाता था। उसके पास एक बेग था जिसमें पतासे रखे हुए थे। ट्रेन में टीसी आता है और उस आदमी से पूछता है कि आपके इस बेग में क्या है।

आदमी – ''बताते हैं।'' टीसी कुछ देर रूकर फिर से पूछता है कि इसमें क्या है।

आदमी – ''बताते हैं।'' फिर थोड़ी देर तक जब आदमी कुछ नहीं बोला तो टीसी को उस पर शक हो गया कि जरूर कोई गड़बड़ है। टीसी उस आदमी को पकड़कर थाने ले आता है और उसका बेग खुलवाता है तो उसमें से पतासे निकलते हैं।

टीसी – पहले ही बता देते कि इसमें पतासे हैं।

आरती मीना, उम्र–12 वर्ष, समूह–उजाला

जियालाल, उम्र–11 वर्ष, समूह–सूरज

मास्टर, बच्चों से – बच्चों बताओं एक तरफ 5 किलो रूई और एक तरफ 2 किलो का पत्थर। इनमें से कौनसी चीज भारी है।

पप्पू – गुरूजी, पत्थर में ज्यादा वजन होगा।

मास्टर – कैसे?

पप्पू – आप छत के नीचे बैठ जाईये। आपके ऊपर छत से एक बार 5 किलो रूई डालेंगे फिर दूसरी बार 2 किलो का पत्थर डालेंगे। पता चल जायेगा कि क्या भारी है।

धर्म सिंह मीना, उम्र–10 वर्ष, समूह–तिरंगा

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

रजनी गुर्जर,
उम्र–6 वर्ष, समूह–सितारे

एक जंगल था। उसमें बहुत सारे पेड़ थे, परन्तु वे सूख रहे थे, उनमें फल नहीं आते थे। उस जंगल में कोई जानवर भी नहीं बचा था। वहाँ एक शेर था जो बहुत दिनों से भूखा था। एक दिन उसे जंगल में तालाब किनारे एक हिरन को पानी पीते हुए दिखा। उसने सोचा कि झपट्टा मारकर इसे मार देता हूँ, फिर सोचा कि ऐसे तो यह मर जायेगा, यह जब पानी पीकर वापस इसी रास्ते से आये तब पकड़ लूंगा। शेर एक पेड़ के पीछे छिप गया। जैसे ही हिरन पेड के सामने से गुजरा तो शेर फिर सोचने लगा कि मैं अचानक इस पर झपट्टा मारूंगा तो यह मर जायेगा.....

नीरू, *समूह–सागर, उम्र–9 वर्ष द्वारा शुरू की गई कहानी को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

रिमझिम करती आई बारिश।
ठण्डी हवा लाई बारिश.....

प्रवीण बैरवा, *उम्र–12 वर्ष, समूह–तिलक द्वारा शुरू की गई कविता को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

पहेलियों के ज़वाब –

1. कंघा
2. रात
3. गुलाब जामुन
4. चकला

मेनका जाट,
कक्षा–3, राजकीय विद्यालय